विचार बिन्दु

भोली भाली सूरत वाले होते हैं जल्लाद भी। –उर्दू कहावत

हमारी लड़ाई पाकिस्तान से है, भारतीय मुसलमानों से नहीं

22 अप्रैल 2025 को जिस निर्ममता और नृशंसता से आतंकवादियों ने पहलगाम, कश्मीर में घूमने गए 26 पर्यटकों की हत्या की, उसने पूरे देश को दहला दिया है। देशवासियों को इस बात ने और भी अधिक गुस्से में भर दिया है कि आतंकवादियों ने पर्यटकों से उनका धर्म पूछा और हिन्दू पुरुषों की पहचान करके उनकी हत्या की। अब तक आतंकवादियों को पकड़ा नहीं जा सका है जबकि सेना एवं अन्य सुरक्षा बलों ने पूरा जोर लगा रखा है। प्रधानमंत्री मोदी ने यह हुंकार भरी है कि आतंकवादी दुनिया के किसी भी कोने में छिपे हों, उन्हें ढूंढ कर निकाला जाएगा और ऐसी सजा दी जाएगी जिसकी कल्पना भी नहीं की होगी ।

सर्वदलीय बैठक में सरकार द्वारा यह स्वीकार किया गया कि सुरक्षा प्रबंधन में कुछ चूक तो हुई है अन्यथा जिस स्थान पर दो-तीन हज़ार पर्यटक हों वहां कोई सुरक्षा बल मौजूद कैसे नहीं था । जिम्मेदारी तय होने पर दोषी के विरुद्ध कार्यवाही भी की जाएगी।

नागरिकों पर हमले की यह आतंककारी घटना 26 नवंबर, 2008 को मुंबई के ताज होटल में हुई घटना के बाद सबसे बड़ी घटना है। प्रारंभिक सूचनाओं से यह स्पष्ट है कि इस आतंकवादी घटना को पाकिस्तानी आतंकियों ने अंजाम दिया है।

संतोष की बात है कि सदैव की तरह देश की 142 करोड़ जनता पूरी तरह से सरकार के साथ है। सभी राजनीतिक दलों ने विभिन्न मतभेद होने के बावजूद, सरकार के साथ एक जुटता व्यक्त की है। सरकार से उन्होंने यह भी अपेक्षा की है कि सरकार इस निर्मम हत्याकांड का पूरी कड़ाई से और बहुत मजबूती से पाकिस्तान के विरुद्ध कार्रवाई करके, उसे सबक सिखाए।

सरकार ने अपनी ओर से एक बहुत बड़ा कदम उठाते हुए सिंधु जल समझौते को एक तरफा स्थगित कर दिया है । ऐसा 1960 के समझौते के बाद पहली बार हुआ है। जिस प्रकार के शब्दों का प्रयोग प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में किया है, उससे यह लगता है कि सरकार आर्थिक, कूटनीतिक और सैन्य सभी स्तर पर पाकिस्तान को उपयुक्त जवाब देगी। सभी राजनीतिक दलों ने सरकार को यह विश्वास दिलाया है कि वे, सभी सरकार की हर कार्यवाही उसके साथ हैं। जो भी कदम सरकार उठाएगी, उसमें उनका समर्थन है।

सरकार अपना उपयुक्त समय देखकर कार्रवाई करेगी। देश उसी की प्रतीक्षा कर रहा है ।

पाकिस्तान से आए आतंकियों ने जिस प्रकार से धर्म के आधार पर पर्यटकों की हत्या की है, उसका स्पष्ट उद्देश्य यही था कि देश में हिंदू और मुसलमान के बीच में घृणा और तनाव उत्पन्न किया जाय। पाकिस्तान का उद्देश्य ही यह है कि भारत में अस्थिरता और अशांति फैले। पाकिस्तान को यह बात लगातार साल रही है कि कैसे भारत के हिंदू और मुसलमान शांति के साथ रहते हुए देश की प्रगति में बराबर का योगदान दे रहे हैं। यह भारतवासियों की परिपक्वता और समझदारी का ही परिणाम है कि उन्होंने पाकिस्तान के इस कुत्सित प्रयास को सफल नहीं होने दिया है।

इस दर्दनाक घटना के संबंध में कई वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रहे हैं । जिन व्यक्तियों की हत्या हुई है, उनके परिजन यह बता रहे हैं कि किस प्रकार स्थानीय मुस्लिम लोगों ने उनकी जान को बचाया है। ऐसा करते समय उन्होंने अपनी जान की भी परवाह नहीं की। स्थानीय टैक्सी वाले, होटल वाले, खच्चर वाले एवं अन्य लोगों ने अनेक पर्यटकों की जान बचाई है।

एक बहुत ही मार्मिक वीडियो इस संबंध में चल रहा है जिसमें छत्तीसगढ़ के भाजपा पार्षद लक्की की पत्नी यह कहती है कि कैसे उनके बच्चों और परिवार की जान बचाने में स्थानीय टूरिस्ट गाइड नज़ाकत ने सहायता की। वह उनके छोटे बच्चों को अपनी गोद में लेकर जमीन पर लेट गया ताकि उन्हें बचाया जा सके। उसने तो यहां तक कहा कि यदि कोई गोली लगी भी, तो पहले उसे लगेगी, तब बच्चों तक पहुंचेगी । 27 वर्षीय मुस्लिम युवक द्वारा अपनी जान की बाजी लगाकर लक्की और उसके बच्चों को बचाने की घटना इंसानियत का अदभुत उदाहरण है। इसी प्रकार एक खच्चर वाले आदिल हुसैन ने पर्यटकों को बचाते हुए ने अपनी जान तक दे दी।

इस दर्दनाक घटना को, कुछ देश -विरोधी तत्व, हिंदू-मुस्लिम का रूप देने का प्रयास कर रहे हैं । कुछ लोगों ने देश के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत कश्मीरी युवकों को शहर से बाहर जाने का अल्टीमेटम दे दिया है। कुछ स्थानों पर उनके साथ मारपीट की भी घटनाएं हुई हैं । हिंदू रक्षा दल के नाम पर जो भी संगठन या दल इस प्रकार के कामों में लिप्त हो रहे हैं, वे परोक्ष रूप में पाकिस्तान के उन आतंकवादियों की ही मदद कर रहे हैं, जिन्होंने देश में अस्थिरता एवं अशांति फैलाने के उद्देश्य से पहलगाम में इस घटना को अंजाम दिया है।

सांसद असदुद्दीन ओवैसी जैसे व्यक्ति, जो सामान्यतया सरकार के विरोध में बहुत कठोर बयान देते रहे हैं, उन्होंने भी इस आतंकवादी घटना को देश पर हमले के रूप में बताया है। यह बात सही भी है कि यह घटना केवल 26 पर्यटकों की हत्या तक सीमित नहीं है, इसका उद्देश्य देश के सांप्रदायिक सौहार्द्र की हत्या करना है। वे उस भावना को मारना चाहते हैं जो सभी धर्म के लोगों को एक साथ लेकर चलती है। सदियों से हिंदू और मुसलमान इस देश में पूरे भाईचारे के साथ रहते आए हैं। यही इस देश की पहचान और ताकत भी है। यदि हम इनमें दरार पैदा करने वाली ताकतों की मदद करेंगे, तो एक तरह से वह काम देश द्रोह जैसा ही होगा ।

उल्लेखनीय है कि सभी मुस्लिम संगठनों ने, यहां तक कि मुल्लाओं और काज़ियों ने भी मस्जिदों से यही संदेश प्रसारित किया है कि पहलगाम की घटना देश पर हुआ हमला है और इसका सबको मिलकर मुकाबला करना है। संतोष की बात यह है कि कुछ सिरफिरे संगठनों की उत्तेजनात्मक गतिविधियों के बावजूद मुस्लिम नागरिक उत्तेजित नहीं हुए हैं।

इस घटना के बहाने जो लोग हिंदू-मुसलमान में नफरत पैदा करना चाह रहे हैं, उन पर सरकार को देशद्रोह का मुकद्दमा चलाना चाहिए।

इस घटना से सबसे बड़ा नुकसान तो कश्मीरी जनता को हुआ है, जहां पर्यटक पिछले कुछ वर्षों से बहुत बड़ी संख्या में आ रहे थे। गत दो-तीन सालों से लगभग 2 करोड़ पर्यटक प्रति वर्ष कश्मीर जा रहे थे । इनसे राज्य को लगभग पचास हजार करोड़ों की आय होती है। इससे न केवल स्थानीय नागरिकों को रोजगार मिला, उनकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर हुई है। हमें लगभग दो वर्ष पूर्व कश्मीर जाने का अवसर मिला था तो मैने यह महसूस किया था कि चप्पे-चप्पे पर सुरक्षा बल की उपस्थिति के कारण, पर्यटकों को सुरक्षा का पूरा अहसास होता था। यह समझ से परे है कि, किस प्रकार पहलगाम की बाई -सरण घाटी जैसे महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल पर, जहां बड़ी संख्या में पर्यटक उपस्थित थे, वहां पर कोई सुरक्षा बल क्यों नहीं थे?

यह संभव है कि पाकिस्तान के साथ आने वाले समय में तनाव और बढ़े और सरकार की ओर से पाकिस्तान को माकूल जवाब दिया जाए। इन परिस्थितियों में देश के अंदर एक जुटता और शांति बने रहना अत्यंत आवश्यक है। ऐसे समय में भारतीय मुसलमान को शंका की दृष्टि से देखने की कार्रवाई करना और उन्हें कश्मीर की घटना के साथ जोड़कर देखना, देश के हित के विपरीत काम करने जैसा ही होगा। ऐसा करके हम पाकिस्तान की ही मदद करेंगे। जिस उद्देश्य से आतंकियों ने इस घटना को किया है, उसमें अप्रत्यक्ष रूप से सहायता ही करेंगे।

वर्तमान समय में सब भारतीय नागरिकों का दायित्व है कि वह हिंदू-मुस्लिम सौहार्द्र को बढ़ाने में अपना सहयोग करें, ताकि मुसलमानों में कतई अलगाव का भाव उत्पन्न ना हो। जब हम कश्मीरी छात्रों को अपनी संस्थाओं से वापस कश्मीर जाने की बात कहेंगे तो उनमें एक प्रकार से हम यह भाव जाने-अनजाने में बिठा देंगे कि कश्मीर भारत का भाग नहीं है। यही हमारी सबसे बड़ी गलती होगी ।

दिल्ली से घूमने गए एक पर्यटक अमरेंद्र सिंह जो मूलत: बिहार के हैं, ने अपनी फेसबुक पोस्ट पर लिखा कि जब इस आतंकवादी घटना के कारण उन्हें एक ही दिन में यात्रा समाप्त कर लौटना पड़ रहा था तो, कैसे वहां के टैक्सी और होटल वालों ने, शेष समय की बुकिंग के बावजूद भी कोई पैसा नहीं लिया और उसे वापस लौटा दिया। जब उन्हें पैसा देने की जिद की गई तो उन्होंने साफ कहा कि "जब आप कश्मीर में घूम ही नहीं पाए, तो हमें आपसे पैसा लेने का कोई हक नहीं है"। इस प्रकार की भावना केवल अच्छे इंसान की ही हो सकती है न कि पर्यटन के माध्यम से केवल पैसा कमाने की भावना वाले व्यक्ति की। उल्लेखनीय है कि पहलगाम की त्रासदी के बाद वहां से लौटने वाले व्यक्तियों के लिए कुछ एयरलाइंस ने अपना किराया 10 गुणा तक बढ़ा दिया था।

जिस प्रकार के स्वचालित हथियार आतंकियों के पास थे और जितना समय उन्हें मिला था, उसे देखते हुए इस घटना में मरने वालों की संख्या बहुत अधिक हो सकती थी। ऐसे समय में स्थानीय व्यवसायियों ने जैसे भी संभव था, पर्यटकों को वहां से सुरक्षित निकालने में अपनी जान को जोखिम में डालकर सहयोग किया। इसकी पुष्टि करने वाले कई वीडियो सोशल मीडिया पर उपलब्ध हैं ।

हमारा दायित्व यह बनता है कि किसी भी समूह या सामाजिक मंच पर यदि कोई व्यक्ति भारतीय मुसलमानों के प्रति नफरत फैलाने वाली कोई बात करे या इस घटना को हिंदू-मुसलमान की घटना बताने का प्रयास करे, तो उसका डटकर विरोध करना चाहिए। हमें उनके समक्ष उन घटनाओं का जिक्र करना चाहिए जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। ऐसा करके हम देश के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन बेहतर तरीके से कर पाएंगे ।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि देश की प्रगति तेज गति से तब ही संभव है जब देश में शांति हो और परस्पर विश्वास का वातावरण हो। शत्रु देश पाकिस्तान, अपने मंसूबों में कामयाब होता दिखेगा, यदि हमारे यहां के कुछ भ्रमित संगठन उनके जाल में फंसकर विभिन्न प्रकार के सोशल मीडिया के माध्यम से मुसलमानों के प्रति नफरत उत्पन्न करने का काम करेंगे।

उल्लेखनीय है कि सभी मुस्लिम संगठनों ने, यहां तक कि मुल्लाओं और काज़ियों ने भी मस्जिदों से यही संदेश प्रसारित किया है कि पहलगाम की घटना देश पर हुआ हमला है और इसका सबको मिलकर मुकाबला करना है। संतोष की बात यह है कि कुछ सिरफिरे संगठनों की उत्तेजनात्मक गतिविधियों के बावजूद मुस्लिम नागरिक उत्तेजित नहीं हुए हैं। वे यह समझते हैं कि बहुत ही कम लोग अपने स्वार्थ के कारण ऐसा कर रहे हैं।

हम सबको यह समझना होगा कि भारत का मुख्य शत्रु पाकिस्तान है न कि कश्मीरी या भारत के अन्य भागों में रहने वाले मुसलमान। यह भावना जाने-अनजाने भी उनके मन में न आए, यह सुनिश्चित करना हम सबका कर्तव्य है।

अब तो देश को यही प्रतीक्षा है कि सरकार किस प्रकार से पाकिस्तान की इस नापाक हरकत का मुंह तोड़ जवाब देती है। इसी सरकार ने नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अपनी इच्छा शक्ति के बल पर, पहले भी 2016 में उड़ी में सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 में बालाकोट में एयर स्ट्राइक की थी।

छोटे-मोटे आर्थिक स्वार्थ को त्याग कर, हमें पाकिस्तान से सभी प्रकार के संबंध विच्छेद करने होंगे, चाहे वे खेलने के संबंध में हो अथवा व्यापार के। देश चाहता है कि आतंकवाद के जनक पाकिस्तान को इस बार अच्छी तरह सबक सिखा ही दिया जाय ।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

देश को प्रगति पथ पर अग्रसर रहना है तो प्रथम अनिवार्य शर्तें हैं सामाजिक शांति-सद्भाव-सौहार्द्र व वैज्ञानिक सोच-शिक्षा

महावीर सिंह

हमारे देश के संविधान में अल्पसंख्यक शब्द का उल्लेख नही हुआ है। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम 1992 के अनुसार निम्न 6 समुदायों को धार्मिक अल्पसंख्यक माना है;–मुस्लिम, बौद्ध, जैन, ईसाई, सिख व पारसी। इसी कानून में, अल्पसंख्यकों की दूसरी पहचान मातृभाषा के आधार पर भाषाई अल्पसंख्यक के आधार पर बताई है।

संविधान का अनुच्छेद 30, धार्मिक व भाषाई अल्पसंख्यकों को अपनी इच्छानुसार शैक्षिक संस्थान बनाने व चलाने का अधिकार देता है। राज्य अल्पसंख्यक समुदायों के साथ भेदभाव नहीं कर सकता है। समानता के सिद्धांत के तहत सभी धर्म वालों को संरक्षण देने का दायित्व सरकारों का है।

सामान्यतया भारत में बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक आपस में अत्यंत सौहार्द्रपूर्ण माहौल में रहते है। एक-दूसरे से मिलते है, एक साथ त्योंहार-उत्सव मनाते है, बधाईयां देते है, गम के मौकों पर मिलते है। एक-दूसरे के साथ व्यापार व वित्तीय सम्बन्ध है। ईसाई, पारसी, बौद्धों के आपसी या बहुसंख्यकों के साथ टकराव के कोई मामले सुने ही नहीं जाते। सिखों व हिंदुओं में सामान्यत: टकराव के अवसर आते नहीं। 30,40 साल पहले, सिख व बहुसंख्यक समुदायों में टकराव की एक-दो अप्रिय घटनाएं हुई हैं। यदाकदा कुछ दिग्भर्मित लोग विदेशी उकसावों के कारण या आपराधिक कारणों से कुछ छोटे-मोटे तनाव के बिंदु पैदा कर देते है। सामान्यत: त्योहारों के अवसर पर बहुत छोटी-छोटी बातों को लेकर दोनों ओर के उग्र स्वभाव वाले लोग, अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए तनाव की स्थिति बनाते है। धार्मिक जुलूस, मूर्ति विसर्जन-ताजियों-पैगम्बर साहब के जन्म दिन आदि के जुलूस, किस रास्ते से जाएगा इसे प्रतिष्ठा का बिंदु बनाया जाता है। तनाव पैदा करने वालों द्वारा अपनाए जाने वाले कुछ ओर नुस्खे -- कोई अपवित्र वस्तु मंदिर मस्जिद में डाल कर या केवल अफवाह फैलाकर, किसी अन्य समुदाय के पवित्र माने जाने वाले पशु की कुर्बानी की अफवाह फैलाकर, किसी धार्मिक किताब को अपवित्र करना-बेअदबी करना-उसके पन्ने फ़ाड़ कर सड़कों पर बिखेरना आदि। यह काम दोनों तरफ के विघ्न सन्तोषी लोग करते है।

मंदिर-मस्जिद के सामने अनावश्यक अधिक ठहराव, अत्यधिक शोर के साथ ढोल नगाड़े बजाना, अजान के लिए जोर से लाउडस्पीकर बजाना या न बजाने देने का दुराग्रह, आपत्तिजनक नारे लगाना, अभद्र तरीके से नाचना, किसी ऐसे तंग रास्ते से जुलूस निकालने की हठ धर्मिता करना जहां अप्रिय घटना को कंट्रोल करने में कठिनाई हो आदि से भी तनाव पैदा होता है जो कभी भी बड़ा रूप ले सकते है।

गौ हत्या तनाव का अन्य अनावश्यक मुख्य मुद्दा। धर्मस्थलों के पुरातन व वर्तमानं मालिकाना हकों के विवाद भी हिंदू और मुसलमानों के बीच संवेदनशील व तनाव का कारण बनते है। धार्मिक मठाधीशों व क्षुद्र मानसिकता के नेताओ की सांप्रदायिक उन्माद और भड़काऊ बयानबाजी के कारण भी त्योहारों व अन्य अवसरों पर तनाव पैदा होरा है। निहित स्वार्थों वाले लोगों द्वारा,आम आदमी को कई तरह के प्रलोभनों से उकसा कर लोगों द्वारा दंगे करवाए जाते हैं। हिन्दू हो या मुसलमान दोनों ओर कुछ लोग रात और दिन ऐसे नारे, सम्बोधन शब्द गढ़ने में लगे रहते है जिन से सामाजिक शांति को पलीता लगता रहे --भारत माता की जय या जय श्रीराम बुलवाकर किसी का देश प्रेम जांचना, बात-बात पर रामजादे-हराम जादे, पाकिस्तान चले जाओ, इनसे मत खरीदो, उनसे खरीदो, वो कलमा पढ़वाकर कर पहचान करते है तो तुम हनुमान चालीसा पढ़वा कर टेस्ट लो, इत्यादि अवांछित जुमले बोलना, बुलवान। इस्लाम धर्म की किताबों में स्त्रियों का समान करने के उल्लेख है किंतु हिंदु देवियों जैसा स्तुति वाला स्थान नहीं है। हम क्यों किसी के राष्ट्र प्रेम की जांच भारत माता की जय या जय श्री राम बुलवाकर ही करें? जय भारत, जय हिंदुस्तान भी तो बोला जाता है।

कुछ सच्चे-झूठे, स्वघोषित व्याख्याकार लोग स्त्रियों के कपड़ों, आने-जाने, लोगों से मिलने-जुलने आदि पर पाबंदियों के फतवे जारी करते है कुछ लोगों को हिजाब को ही मुद्दा बनाने में आनन्द आता है, वोट के लिए? कुछ जगह जहां कानूनी दायरे में व्यक्ति की पहचान जरूरी वहां हिजाब हटाना जरूरी है,यह मुसलमानों को भी समझना होगा।

समुदाय, धर्म के आधार स्त्रियों पर अनावश्यक पुरातन पाबंदियां लगाने का प्रयास करते है उन देशों को आर्थिक रूप से मूल्य चुकाना पड़ता है। उन देशों की स्त्रियों का वहां की अर्थ व्यवस्था, विज्ञान व तकनिकी प्रगति में उनकी संख्यानुसार के अनुसार पर्याप्त योगदान नही दे पाती है।

क्या स्त्रियों के सम्बंध में इस प्रकार के प्रतिगामी निर्णय जैसे कि किसी भी समुदाय की लड़कियां -स्त्रियां क्या पहनें, कितने बच्चे पैदा करे आदि तय करने का अधिकार राज्य व धार्मिक मठाधीशों द्वारा तय किया जाएगा या उनके द्वारा पोषित कुछ सेनाओं, गुंडा तत्वों द्वारा किया जाएगा?

धार्मिक जुलूसों के रूट्स को तय कर पालना करवाना, जिन लोगों से शांति भंग करने की आशंका हो उन्हें चिन्हित कर शांति कायम रखने के लिए पाबंद करना और इन को कड़ाई से लागू करने, अफवाहें फैलाने वालों पर कठोर कानूनी प्रावधानों का उपयोग करने व हर हालत में शांत कायम रखने का कर्तव्य स्थानीय प्रशासन का होता है। उन्हें यह कार्य बिना किसी प्रकार के बड़े से बड़े बाहरी या भीतरी दबाव के करना चाहिए। कई दफा असक्षम व सिफरसी अधिकारी बाहरी हस्तक्षेप के सामने झुक जाते है और तनाव की,दंगों की स्थितियां उतपन्न हो जाती है।

भारत के मुसलमान उतने ही देश प्रेमी हैं जितने दूसरे भारत के नागरिक है। किसी एक नागरिक को दूसरे नागरिक के देशप्रेम की जांच का अधिकार नहीं। भारतीय मुसलमानों के पास आजादी के समय भारत या पाकिस्तान चुनने का अधिकार था। यह लोगों को यहां, अपनी जड़ों-परिवेश-भाई चारे के सौहार्द्रपूर्ण माहौल से प्रेम करते थे और सँविधान में दिए संरक्षण के आश्वासनों के कारण ही इन्होंने भारत को अपना देश चुना था। भारत में हिंदुओं और मुसलमानों की धार्मिक और सांस्कृतिक आस्थाएं, मान्यताएं, मूल्य अलग अलग है और यह मतभेदों का प्रमुख मुद्दा है। दोनों समुदायों के अग्रणी लोग अपनी सुविधानुसार व हितों के अनुसार अलग दृष्टिकोण और व्याख्याएं करते है।

हिन्दू धर्म में किसी एक ही व्याख्या पर आग्रह या दुराग्रह की भावना, स्थान नहीं है। यहां ईश्वरतव: प्राप्ति का, एक ही और यही एक मार्ग है ऐसा भाव कभी रहा ही नही। हिन्दू धर्म अत्यन्त प्राचीन धर्म है। इसमें,अनेक व्याख्याओं पर बहु पक्षो के तर्क-वितर्क चलते रहे है और अब भी चल रहते है।अनेक व्याख्याओं को स्वीकार किया जाता रहा है। इस्लाम धर्मावलंबियों को धर्मग्रन्थों के सम्बंध में इस प्रकार की सद्भाव वाली बहु व्याख्या भावना विकसित करनी होगी। धार्मिक गन्थों की व्याख्या उल्लेमाओं के सीमित समूह के अतिरिक्त भी लोग कर सकें, यह भाव विकसित करना होगा। शायद भारतीय इस्लाम में अभी तक, इस की कमी रही है।

इस्लाम में आस्था रखने वाले बुद्धजीवियों, कलाकारों, लेखकों को कुरान, हदीस आदि की, शास्त्रों के अनुरुप किन्तु प्रचलित व्याख्याओं से भिन्न प्रकार से व्याख्या करने का खुला, भयरहित वातावरण नहीं मिलता जो मिलना चाहिए। सामान्य मुसलमान को भिन्न-भिन्न व्याख्याएं पढ़ना और उन पर खुली बहसें करने के अवसर मिलने चाहिए जो वर्तमानं में सुनना दुर्लभ सा है। कोई हिम्मत करता भी है तो उसे अनेक भय दिखाकर चुप करा दिया जाता है। इस्लाम मानने वालों को और मुख्यत: बुद्धिजीवियों, कलाकारों, विद्यार्थियों, समाज चिंतकों के द्वारा उग्रवादियों, आतंकवादियों का पुरजोर तरीके से, हर सम्भव प्रकार से खुलकर विरोध करना चाहिए,चाहे 5,5,10,10 के समूह ही क्यों न हो। मीडिया को भी ऐसे समूहों को तरजीह देनी चाहिए, जिसका वर्तमानं में अत्यंत अभाव दिखता है।

हिन्दू उग्रवादियों संगठनों से भी अपेक्षा है कि वे समझें कि 20 करोड़ मुस्लिम भी उतने ही अच्छे है जितने दूसरे हिंदुस्तानी नागरिक है। भारत का संविधान, किसी अतिवादी संगठन को उनके देश प्रेम पर अंगुली उठाने की अनुमति नहीं देता है। मुठ्ठीभर दिग्भर्मित उग्रवादी लोग मुस्लिमों में भी मिलते है तो हिंदुओं में भी मिल जाते है जो बार-बार एक फुसरे पर संदेह वाले ताने कसते है- नारे लगाते है, मोब्लिंचिंग करते है। हिन्दू कट्टरपंथी-उग्रवादी संगठन मुसलमानों को विभिन्न प्रकार से द्वितीय श्रेणी के नागरिक होने का एहसास करवाने का पुरजोर प्रयास करते रहते हैं। यह सब ऐसे कृत्य है जो समाज को अपरिवर्तनिय तरीके से विभाजित करते है। यह अत्यंत घातक हो सकते है।

आम नागरिक की तो, नई-पुरानी सभी सरकारों से यह अपेक्षा रही है कि देश सँविधान के अनुसार चले। किसी धार्मिक सम्प्रदाय के पूर्णत: धार्मिक मसलों में सरकारें पक्ष लेती या कोई दुराग्रह आधारित कार्य करते नहीं दिखनी चाहिए। अतिवादी संगठन चाहे मुस्लिमों के हों, चाहे हिंदुओं के उनसे बराबर की सख्ती से निपटना चाहिए। यह सरकार का काम नहीं है कि किसी धर्म विशेष के जुलूसों पर फूल वर्षाए या कोई विशेष रियायतें दें।

सरकारों से एक, दो प्रश्न भी--जो मंत्री लोग, जो पार्टियों के बड़े पदाधिकारी आए दिन हिन्दू-मुसलमान के नाम पर भ्रामक बयान देते हैं, उनको अपने पदों पर क्यों बनाए रखा जाता है?

एक पूर्व राजनयिक के विचार सुने, उनका यहां उल्लेख आवश्य करूंगा-- - पाकिस्तान तो भारतीय समाज में हिन्दू-मुसलमान में विभाजित करना ही चाहता है किंतु भारतीय टीवी चैनल्स, कुछ अतिवादी घटिया राजनेताओं व धर्मों के स्वघोषित व निहित स्वार्थ वाले मठाधीशों की बेसिर-पैर की उलूल-जुलुल बातों पर अवांछित डिबेट चलाते रहते है। यह अपरोक्ष रूप से पाकिस्तान के पक्ष का एजेंडा बन जाता है। बहुत से विद्वानों के अनुसार हमारे टीवी चैनल्स पर बहुत सी बार पाकिस्तान को लेकर निरर्थक बहस चलाई जाती है। ऐसे बहस की जाती है मानो जो कुछ सरकार को नही मालूम वह इन्हें पता है। देशों के बीच के मसलों का फैसला टीवी बहसों से नहीं होता।

अंत में पहलगांव हिंसा के बाद पूरे देश में हो रहे विरोध प्रदर्शनों में कुछ अत्यंत शुभ संकेत भी उभरे है। 25 अप्रेल 2025 को जुम्मे की नवाज के बाद अनेक स्थानों पर मुस्लिम भाईयों ने पाकिस्तान की नापाक हरकत का काली पट्टी बांधकर खुलकर विरोध किया। इन प्रदर्शनों में कई नामचीन मुस्लिम पॉलिटिशियन्स भी देखे गए। शुभ अतिशुभ संकेत। यह सिलसिला थमना नही चाहिए। आपसी समझ, संवाद, सहयोग से ही दोनों समुदायों के बीच शांति और सौहार्द बढ़ेगा। सँविधान में अधिकार है तो धारा 51 में नागरिकों के कर्तव्य भी उल्लेखित है। दोनों पर समान रूप से विचार होगा तो शांति-सद्भाव कायम रहेगा। आतंकवादी, उग्रवादी किसी भी धर्म के हों, बिना भेद भाव के सख्ती से निपटना ही सही रास्ता होगा।

–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस

नोखा कस्बे में पेयजल संकट गहराया, पानी सप्लाई व्यवस्था चरमराई

निजी ट्यूबवेल मालिकों ने पानी टैंकर की कीमतें दोगुनी कर दी, स्थानीय लोगों ने रोष जताया

नोखा, (निसं)। नोखा कस्बे में पेयजल संकट गहरा गया है। जलदाय विभाग की पानी सप्लाई व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई है। इस कारण लोगों को निजी टैंकरों पर निर्भर रहना पड़ रहा है। हाल ही में निजी ट्यूबवेल मालिकों ने पानी टैंकर की कीमतें दोगुनी कर दी हैं। पहले जहां एक टैंकर 250-300 रुपए में मिलता था, वहीं अब इसकी कीमत 500-600 रुपए हो गई है। इस मुद्दे को लेकर सर्व समाज संघर्ष समिति ने प्रदर्शन किया। समिति ने एसडीएम के माध्यम से जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा।

यह मामला नगरपालिका के एक नोटिस से जुड़ा है। कुछ दिन पहले नगरपालिका के अधिशाषी अधिकारी ने एसडीएम के मौखिक आदेश पर निजी ट्यूबवेल मालिकों को नोटिस जारी किए थे। मगर तीन दिन बाद ही प्रशासन ने इन नोटिस को स्थगित कर दिया। इसके बाद ट्यूबवेल मालिकों ने टैंकर की कीमतें बढ़ा दी। ज्ञापन में यह

■ सर्व समाज संघर्ष समिति ने प्रदर्शन कर एसडीएम के माध्यम से कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा

भी बताया गया कि अधिकतर निजी ट्यूबवेल सरकारी मानकों को पूरा नहीं करते। न तो ड्राइवरों के पास लाइसेंस है और न ही वाहनों का बीमा या फिटनेस सर्टिफिकेट है। इससे दुर्घटना का खतरा बना रहता है। गर्मी के मौसम में जहां सरकार गरीब परिवारों को मुफ्त पेयजल टैंकर उपलब्ध कराती है, वहीं नोखा में लोगों को महंगे दामों पर पानी खरीदना पड़ रहा है। कंटीजेंसी प्लान में आवंटित बजट का भी पेयजल के लिए कोई उपयोग नहीं हो रहा है।

ज्ञापन में मांग की है कि इस भीषण गर्मी के मौसम में निजी पेयजल ट्यूबवेल संचालकों द्वारा बढोतरी की गई दरें जल्द से जल्द कम व वाजिब दर निर्धारित किए जाने हेतु पाबन्द किया जाए। सभी निजी पेयजल टैंकरों के ड्राइवरों के ड्राइविंग लाईसेंस सहित संबंधित समस्त कागजातों की पूर्ण जांच करवाई जाए और निजी ट्यूबवेल के लिए निर्धारित सभी मापदण्डों की पालना करवाई जाए। नोखा कस्बे के प्रत्येक गरीब परिवार के लिए निशुल्क पेजयल पानी टैंकर की समुचित व्यवस्था करवाई जाए। जलदाय विभाग में लम्बे समय से हो रहे भ्रष्टाचार की उच्च स्तरीय जांच करवाई जाए और सालों से जमे बैठे ठेकेदारों को ब्लैक लिस्टेड किया जाए और नोखा शहर क्षेत्र में नियमित पेयजल सप्लाई हेतु कार्मिकों की लॉगबुक का निरीक्षण कर पानी सप्लाई बरती जा रही अनियमितताओं के विरूद्ध कार्रवाई की जाए। ज्ञापन में बताया कि हमारी चार सूत्री मांगों पर सहानुभूति पूर्वक एक सप्ताह के भीतर प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करवाएं, अन्यथा मजबूरन हमें जन आन्दोलन, अनिश्चितकालीन धरना एवं प्रदर्शन करने को मजबूर होना पड़ेगा।

चौतीना कुआं के हर घर में उल्टी-दस्त के रोगी

बीकानेर, (निसं)। नहरबंदी के बीच अब गंदे पानी की शिकायतें बढ़ने लगी हैं। बदबूदार पानी और उसमें पीलापन आ रहा है। चौतीना कुआं में ये समस्या लंबे समय से बनी हुई है। पहले खुलासा हुआ था कि सांखला फाटक के पास एक नाले से लाइन लीकेज है, जो नाले से होकर आ रही है। ठीक किया मगर अब वापस पानी गंदा आ रहा है।

दो दिन से मोहल्लेवासियों ने एईएन को बुलाया, मगर टीम मौके पर ही नहीं गई। चौतीना कुआं के हर घर में उल्टी, दस्त और पेट में ऐंठन की शिकायतें सामने आ रही है। घरों में लोग पानी की टंकी का पानी दिखा रहे हैं जिसमें झाग ही झाग दिख रहा है। यही पानी लोग पीने को मजबूर हैं। ये समस्या कई महीने पुरानी है। तमाम शिकायतों के बाद जलदाय विभाग जागा और सामने आया कि सांखला फाटक से कुछ दूरी पर एक नाले से पाइप लाइन गुजर रही है। लाइन में लीकेज था इसलिए नाले का गंदा पानी लोगों के घरों तक पहुंच रहा था। जब लोगों ने हल्ला मचाया तो सच्चाई सामने आई। अब वापस वही हालात हो गए। ऊपर से पीएचईडी पर सप्लाई करने का दबाव है तो वहां भी से कुछ

■ घरों में लोग पानी की टंकी का पानी दिखा रहे हैं, जिसमें झाग ही झाग दिख रहा है, यही पानी लोग पीने को मजबूर हैं

पानी ठीक नहीं आ रहा। ऐसे में अस्पतालों में पेट दर्द, उल्टी दस्त के रोगी पहुंच रहे हैं। कायदे से अब तक विभाग एक दिन छोड़कर जलापूर्ति कर रहा है तो पानी अच्छे से फिल्टर होना चाहिए।

निवर्तमान पार्षद आनंद सिंह सोढ़ा का कहना है कि तीन दिन से चौतीना कुआं में लोग बेहाल हैं। पीएचईडी के एईएन रवि चौधरी को तीन दिन से मौके पर बुला रहे हैं, मगर वे आज की कल कर रहे हैं। लगता है अब दफ्तर पर ताला ही डालना पड़ेगा। लोग मर रहे हैं और अभियंताओं को मौका मुआयना करने की फुर्सत ही नहीं। वैसे ही लोग कटौती शुरू होने से दुखी हैं। ऊपर से गंदा पानी सप्लाई हो रहा है। यहां जेलवेल टंकी से सप्लाई होती है।

राशिफल मंगलवार 29 अप्रैल, 2025

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, कृत्तिका नक्षत्र सायं 6:47 तक, सौभाग्य योग दिन 3:53 तक, बालव करण प्रात: 7:21 तक, चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-वृष, मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से सायं 5:32 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सायं 6:47 तक रहेगा। आज चन्द्र दर्शन दक्षिण श्रृंगोन्नति, शिवाजी जयन्ती, श्री परशुराम जयन्ती है। आज अगस्तस्य अस्त रात्रि 10:26 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:09 से 10:47 तक, लाभ अमृत 10:47 से 2:02 तक, शुभ 3:39 से 5:17 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:54, सूर्यास्त 6:54

मेष
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक र